प्रातःक्लास ओमशांति शिवबाबा याद हैं? 3.2.68

ओमशांति। भगवानुवाचः बच्चे भी यही समझते होंगे जरूर। बरोबर शिवबाबा जिसको भगवान कहा जाता है वह बैठ हमको पढ़ाते हैं। हम बहुत पुराने स्टुडेंट हैं एक ही टीचर के पास। उस पढ़ाई में 12मास एक टीचर पास पढ़ते हैं फिर टीचर बदला हो जाता है। यहां यह मुख्य टीचर उक(एक) ही है जो कब बदली नहीं होता। बाकी बच्चियां तो बहुत हैं राजयोग सिखलाने लिए। एक से काम बल(बन) न सके। पावन बनने लिए एक ही को बुलाते हैं तो वहीं पावन बनाने वाला टीचर ठहरा। वंडर तो यह है जो चिल्लाते हैं ;परंतु समझते कुछ भी नहीं हैं। दिखाते हैं द्रौपदी ने पुकारा हमको नंगन करते हैं। इनसे रक्षा करो। अभी तुम जानते हो एक थोड़े ही है। हजारों–करोड़ों हैं नंगन होते रहते। सभी नहीं पुकारते हैं। जिनको बाप की डायरैक्शन मिलती है पावन बनने लिए उनको पतित होने तंग करते हैं तो पुकारती है। आधा कल्प तुम पतित थे। तुम ही पुकारते हो। इस समय सारी दुनियां पतित है ना। पतित और पावन में रात–दिन का फर्क है। पतित बिल्कुल ही पत्थर बुद्धि हैं। पतित को छूना भी नहीं होता है। मेहतर को पतित कहते हैं ,कोई को छूता नहीं ;पंरतु इतना पतित नहीं जितना घर में वैश्यायें पतित होती हैं। मेहतर तो उनसे बेहतर है। तो अभी बाप सच्ची2 घृणा दिलाते हैं। मनुष्य जो पतित बनते हैं वही पुकारते हैं। पतित–पावन आओ। भल सतसंग में जाते रहेंगे। सन्यासी उदासी बड़े2 भक्त लोग तो ताली बजाते बहुत गाते हैं ;परंतु पतितपने का अर्थ नहीं समझते। जबकि विकारों से सन्यास किया है। फिर क्यों कहते हो पतित–पावन .....इस समय सारी दुनियां ही पतित है तो जरूर सभी कहेंगे। अंदर में आत्मा समझती है पतित–पावन एक ही बाप है। मुझ आत्मा को जो यह शरीर मिला है वह भी पतित है इसलिए झुक रहा है। देवताओं का फर्स्टक्लास पावन शरीर था। वह तो राज्य करते थे। वह है पारस बुद्धि। अभी हैं पत्थर बुद्धि। पतित। यह गायन भी भारत में ही होता है। और खंडों में समझते ही नहीं हैं। जो जैसे हैं उनको वैसे बताने से भी बिगर पड़ते हैं बंदरों मिसल। तुम बच्चों को सारा दिन यही खयालात आती है वा नहीं। सर्विसेबुल को तो जरूर खयालात आती होगी। और पुरुषार्थ करते होंगे पतितों को पावन बनाने का। बाप का तो फर्ज है ना। जितना बाप को ओना होता है उतना बच्चों को भी होना चाहिए। बाप कहते हैं तुम बच्चों को तो हम अपने से भी उंच ले जाता हूं। तुम मेरे से बहुत जास्ती सर्विस करते हो। प्रदर्शनी आदि में 5/6 घंटा बैठ समझाते हो। बाप बच्चों की महिमा भी करते हैं ;परंतु वह खुशी, वह याद कम दिखाई पड़ती है। बेहद का बाप इन द्वारा बैठ तुमको पढ़ाते हैं। यह तो सबसे नजदीक है ना। बाप और दादा इतना नजदीक कब देखा? मुख्य है ही आत्मा। आत्मा इससे निकल जाये तो शरीर कोई काम का नहीं। मनुष्य के शरीर की कोई वैल्यु नहीं। जनावरों की तो भी हड्डियां ,खाल आदि काम में आती हैं। मनुष्य का शरीर तो राख हो जाता है। सतयुग से त्रेता तक देवताओं का राज्य था। उन्हों का कितना मूल्य है। पूजना लायक है फिर पुजारी बनने से पाई का मूल्य नहीं रहता। (इसको) कहा जाता है बर्थ नॉट अपेनी। पत्थर बुद्धि। पैसे के लिए कितने भरियां ढोते रहते हैं। चिंतन .....है। वहां तो बिल्कुल ही निश्चिंत रहते हैं। तो बाप कहते हैं यह टाइम तुम्हारा बहुत वैल्युएबल है। ....वेस्ट (न) गंवाओ। अपन को आत्मा समझ याद की यात्रा पर रहो। सिवाय याद की और कोई उपाय नहीं पावन बनने का। यह उपाय सिर्फ एक ही गीता में है। जिसमें पतित–पावन बाप खुद कहते हैं हे पतित आत्माओं आओ तो तुमको पावन बनावें। अभी तो सभी पतित ,कंगाल हैं। तुम्हारे आगे कोई धनवान खड़ा हो तो तुम क्या समझेंगे? तुम्हारे आगे तो सब कंगाल हैं। तुम पदमपति बनने वाले हो। यहां वे पदमपति नहीं। यह तो नर्क के पदमपति हैं। तुम ही नर्क और स्वर्ग को समझते हो। मनुष्य तो जरा भी नहीं समझते हैं। आगे चल जब विनाश के कड़े आसार (देखेंगे) तो समझेंगे यह तो विनाश होता है पुरानी दुनियां का। तब कहेंगे ब्र0कुमारियां .. .सच्च कहती (थीं) ; (परंतु) उस समय कर क्या सकेंगे? कुछ भी नहीं। पैसे आदि सब जलकर भसम हो जावेंगे।

बम्स गिरते रहेंगे, मकान ,जायदाद आदि सब खलास हो जावेंगे। यह सीन वर्ष दो देखते रहेंगे। बड़ा भयानक पार्ट है। उस समय कोई ज्ञान उठाय न सके। अभी तुम बच्चे यहां आये ही हो भगवान से पढ़ने। तुम कितने तकदीरवान हो। यह भी सबको निश्चय नहीं है। निश्चय हो तो क्यों न पढ़ें। रात–दिन बत्ती (जगाय)कर ,खाना न खाकर भी इस पढ़ाई में लग जायें। समझते हैं यही पढ़ाई पढ़ने से तो 21जन्म का फल मिलता है। सिर्फ बाप को याद करना है। और कोई झरमुई–झगमुई में टाइम नहीं गंवाना है। बाबा जानते हैं घूमने–फिरने जाते हैं तो झरमुई–झगमुई ही करते रहेंगे। एक भी याद में नहीं जाते हैं। अगर ज्ञान का चिंतन हो तो बहुत ओना रहे। टाइम तो बहुत थोड़ा है। सर्विस बहुत करनी है। हम अपना जीवन तो सुधारें। बाबा बार2 कहते रहते हैं और सभी बातें छोड़ अपना जीवन सुधार लो। बहुत हंगामा होगा। सभी आपस में लड़कर खतम हो जावेंगे। जिसको सिविल वार कहा जाता है। ड्रामा की भावी ऐसी बनी हुई है। अपने दिल से पूछो हम कितना समय याद में रहते हैं। कोई2 तो मिनट भी मुश्किल सच्ची दिल से युक्तियुक्त याद करते हैं। उस लव से बाप को याद किया जाता है ना। बिगर लव याद ठहर न सके। बहुत तो जैसे लाचारी याद करते हैं। सो भी एक/दो मिनट। सच्ची दिल पर ही साहब राजी होते हैं। बहुत हैं जो कुछ भी नहीं समझते। इसलिए गायन है रीढ़ क्या समझे राज को.....अब बाप आया हुआ है। एक ही आवाज़ करते हैं बच्चे मनमनाभव। मामेकम् याद करो तो तुम्हारे पाप भसम हो जावेंगे। हम ही तुम्हारा दोस्त हैं। और तो सभी तुम्हारे दुश्मन हैं। तुम ब्राह्मणों में भी बहुत हैं जो एक/दो के दुश्मन हैं। आपस में लड़ पड़ते हैं तो दोस्त कैसे कहेंगे?इसलिए बाप कहते हैं भाई2 समझो तो दुश्मनी खतम हो जावेगी। तुम भी आत्मा हो, वह भी आत्मा है। बाप कहते हैं यह तो बहुत ही सहज है। और सभी बकवाद छोड़ एकांत में बैठ बाप को याद करो। बाबा बार2 कहते हैं सिमर2 सुख पाओ..... ....भक्तिमार्ग में भी यह गाते हैं ;परंतु भक्ति तो दुर्गति में ले जाती है। जिनको भी सिमरते हैं उनके आक्युपेशन को जानते ही नहीं। तो ऐसे चीज़ को सिमरने से दुःख ही मिलेगा और क्या? कब हनुमान को सिमरो, कब शिव को सिमरो ;परंतु उनसे क्या होगा? तो एक हैं सिमर2 दुःख पाओ.....एक है सिमर2 सुख पाओ। भक्तिमार्ग में माथा टेकते धक्के खाते रहते हैं। वह है ही रात। शिवबाबा थोड़े ही कहते हैं मेरी रात है। रात में तो धक्के खाते हैं। वह तो नम्बरवन ब्रह्मा ही खाते हैं। और इनके साथ ब्राह्मण भी हैं। ब्राह्मणों का सारा कुल है। फिर सब आकर सुख पाते हैं एक को सिमरने से। तुमको जो भी मिले उनको कहो शिवबाबा को याद करो तो पाप कट जावेंगे। भक्तिमार्ग में अनेकों का सिमरण करते2 सीढ़ी उतरते पापात्मा ही बनते जाते हैं। अब बाप कहते हैं अर्थ सहित मामेकम् याद करो। मैं आया हूं तुमको पारस बनाने। शिवबाबा ही पतित–पावन है। यह कोई जानते थोड़े ही हैं। वह कैसे आकर पतित से पावन बनाते हैं। यहां बैठे हुए भी जैसे बहुत दूर बैठे हुए हैं। माया कितना भुलाय देती है। तुम जो कहते हो बाबा हम याद करते हैं ,माया भुलाय देती है। अरे, बाप को याद न करेंगे तो वर्सा कैसे मिलेगा? जितना याद करेंगे उतना वर्सा आटोमेटिकली मिलता है। बाप तो जानते हैं राजधानी स्थापन हो रही है। इसमें सूर्यवंशी–चंद्रवंशी सब हैं। तो बाप कहते हैं तुम बच्चों को कि कितनों को कानों तक आवाज़ पहुंचाना है। गली2 में मंदिरों में जाओ। जो हमारे भक्त हैं उन्हों को समझाओ। जो हमारे भक्त सो ही देवताओं के भक्त। संगमयुगी ब्राह्मण तो तुम बने ही हो। बाप कितना अच्छी रीत बैठ समझाते हैं ;परंतु कितने की बुद्धि में बिल्कुल ही धारण नहीं होती है। बुद्धि और2 तरफ चली जाती है। देखने से ही झट मालूम पड़ जाता है। अरे, बेहद का बाप जिसको .... कल्प तुमने नहीं देखा है वह यहां सम्मुख बैठे हैं। ऐसे बाप को तुम देखते नहीं हो। उनको तो अच्छी रीत देखना चाहिए। वह स्टुडेंट तो टीचर के सिकल को तो देखते हैं। वह थोड़े ही जानते हैं। इसमें आत्मा पढ़ती है। बाप तो कहते हैं मैं यहां (भृकुटि बीच) बैठा हूं। इन कर्मेंद्रियों द्वारा तुमको पढ़ता(पढ़ाता) हूं।

तुमको पढ़ाने वाला यहां बैठा है तो भी बहुतों को पता नहीं पड़ता। दुनियां में मनुष्यों की वृत्ति बड़ी गंदी है। कैसे2 वृत्ति वाले मनुष्य आते हैं। यह आंखें ही बड़ी धोखा देने वाली हैं। इसलिए सूरदास का भी मिसाल है। बाप तुमको कहते हैं आत्मा को देखना है। आत्मा पढ़ती है ना। आंखें, टांगें आदि थोड़े ही पढ़ती हैं। पढ़ने वाली आत्मा है। संस्कार सभी आत्मा में ही रहती है। अपन को आत्मा समझ आत्मा की ही दृष्टि से देखना इसमें ही मेहनत है। मेहनत बिगर विश्व के मालिक थोड़े ही बनेंगे। वंडर है ना। बेहद की पढ़ाई बेहद का बाप पढ़ाने वाला है। राजा से रंक तक तुम यहां बनते हो इस पढ़ाई से। फिर जितना जो अच्छी रीत पढ़कर और पढ़ावेंगे। जो पढ़ाते हैं वही सर्विसएबुल है। सर्विस नहीं करते तो समझा जाता है पाई–पैसे का पद पावेंगे। जैसे प्रजा में नौकर–चाकर वैसे राजाई में। भल पीछे लिफ्ट मिलती है ;परंतु मोचरा खाकर मानी टूकड़ मिल जाता है। इसलिए पुरुषार्थ बहुत अच्छा करना चाहिए। बाबा के सम्मुख हैं तो बहुत प्यार से बैठ सुनना चाहिए। फिर रिपीट करना चाहिए। स्टुडेंट को भी घर का काम मिलता है तो उसमें पूरा ध्यान देते हैं। तुमको भी सुनकर फिर रिपीट करना है। बहुत हैं जो कुछ भी धारण नहीं कर सकते हैं। जैसे कि पत्थर बुद्धि। और ही रो रत्ती जास्ती। बाप का बनकर फिर और कोई करके भूल करते हैं तो सौणा डन्ड आ जाता है। पत्थर बुद्धि से भी कहेंगे लिड बुध (बुद्धि), गोबर बुद्धि। राजधानी स्थापन हो रही है ना। जो सब बनते हैं उनको कहेंगे पारसबुद्धि। जो रंक बनते हैं वह जरूर गोबर बुद्धि ही होंगे। उनके बात–चीत से ही जैसे कि बास आती है। बाप कहते हैं बच्चे, टाइम वेस्ट मत करो। बहुत भारी मंज़िल है। यहां तुम आये ही हो नर से नारायण बनने। नौकर–चाकर बनने थोड़े ही आये हो। आगे चल तुमको सब सा. होगा एक्युरेट कि हम यह बनने वाले हैं। जो कुछ भी सर्विस नहीं करते, किसी का भी कल्याण नहीं करते हैं वह (क्या) बनेंगे? कोई तो रात–दिन म्यूजियम ,प्रदर्शनी में लगे रहते हैं। तब बाप कहते हैं म्यूजियम बहुत अच्छा बनाओ। अच्छी चीज देखे मनुष्य बहुत आते हैं। ऐसा बनाओ जो एकदम स्वर्ग लगा पड़ा हो। तो बहुत आवेंगे। आगे यह प्रदर्शनी आदि थोड़े ही थी। दिनप्रतिदिन नये2 बातें, नये2 चित्र आदि एड होते जावेंगे। विचार–सागर–मंथन बच्चों का होता रहता है। चित्रों के अर्थ को न जानने कारण मनुष्य झट बिगर पड़ते हैं। कृष्ण तो अमर है। भगवान है। अरे, वह भी तो मनुष्य हैं ना। दैवी गुण धारण है इसलिए उनको देवता कहा जाता है। जब तक बाप न आया है किसमें भी दैवीगुण हो न सके। अभी बाप आया हुआ है। तुम समझते हो बाप दैवीगुण धारण करा रहे हैं। उनको कहा जाता है रजोवनेशन। आत्मा और शरीरा सब....बन जाती है। ऐसा कोई कहेंगे क्या नये कपड़े बदल पुराने पहनो। नया माना नया। भगवान आकर जरूर कमाल कर दिखावेंगे। भगवान तो कमाल करते हैं। स्वर्ग की स्थापना करने वाला है। स्वर्ग और नर्क दोनों इकट्ठे थोड़े ही होते हैं। पुरानी दुनियां तो जरूर विनाश होगी ही । कहां तक चलेंगे? इसका मुदा जरूर है। नई सो पुरानी यह ड्रामा एक्युरेट है। एक मिनट भी कम जास्ती नहीं हो सकता। यह स्थापना ,विनाश का सीन वंडरफुल है। देखना ओर समझना भी यह चाहिए कि पुरानी दुनियां नर्क सो नई दुनियां स्वर्ग कैसे बनती है। वंडर है ना। बाप कैसे लायक बनाते हैं। यह तुम्हारा जीवन अमूल्य गाया जाता है। सो भी नम्बरवार हैं जो अच्छी रीत पढ़कर और श्रीमत पर चलते हैं। मनुष्य धंधे आदि में कितना नुकसान, दीवाला मारते हैं। अक्सर करके मनुष्य ऐसे ही हाथ खाली जाते हैं। तुम तो 21जन्मों लिए हाथ भरतू जाते हो। देखना है हमारे हाथ खाली हैं या भरतू। अच्छे कर्मों का फल भी अच्छा मिलता है। जितना तुम अच्छा पुरुषार्थ करेंगे उतना ही फर्स्टक्लास फल मिलेगा। नम्बरवार मर्तबे तो बहुत हैं ना। बच्चों को पढ़ाई में बहुत ध्यान देना है। सर्विस से ही बाबा समझ सकते हैं कितना होशियार है। लाइन क्लीयर है वा नहीं। बाप एक2 को समझ जाते हैं। बाबा तो हरेक के नब्ज को जानते हैं ना। हिसाब–किताब हरेक का देखते हैं। बताते हैं बाबा यह सब आपका है। मैं तो अपन को आत्मा समझता हूं। और कुछ है नहीं। यहां तो तुमको आत्माभिमानी बनना है ना। वह है देहाभिमानी। अच्छा, ओम।